IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भोलाराम का जीव : एक फैंटसी

डॉ विजया जगन्नाथ पिंजारी – शिंदे
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय पाचवड,
तालुका - वाई, जिला- सातारा।
मेल आईडी

हिंदी साहित्य के एक प्रतिष्ठित व्यंग्य रचनाकार के रूप में हरिशंकर परसाई जी को पहचाना जाता है। परसाई जी विचार से मार्क्सवादी लेखक थे , तो दूसरी ओर कबीर के शिष्य थे । सामाजिक अथवा पारिवारिक स्तर पर भी आप हित संबंधों में फंसे हुए नहीं थे जो बुरा, विद्रूप, असंगत, काला, अमानवीय दिखाई देता था। उस पर वह हमेशा बोलते थे। परसाई जी ने अपने जीवन दृष्टि को खुली आंखों से स्वीकार कर लिया था । अपने विचारों पर पारंपरिक और सामाजिक समस्याओं से जून्झने की विवशता होने पर भी परसाई जी ने अपने विचारों से कभी मुंह नहीं मोड बल्कि उनकी जीवन दृष्टि समय के साथ और स्पष्ट तथा स्थिर हुई।

हरिशंकर परसाई जी की भोलाराम का जीव एक व्यंग कहानी है साथ ही साथ एक फैंटसी कहानी है। फैंटसी शब्द से तात्पर्य है फैंसी से जुड़ा हुआ। जो कल्पना पर आधारित है वास्तव नहीं है। अतिरंजक, कल्पना पूर्ण निर्मित फैंटसी है। फैंटसी वास्तव के प्रति नवीन दृष्टि प्रस्तुत करती है।

वास्तव का बोध कराने के लिए जब व्यवहार में प्रचलित साधन अपर्याप्त जान पड़ते हैं तब इसका प्रयोग किया जाता है जीवन दिन-दिन जटिल बनता जा रहा है। उसके नए-नए रूप स्पष्ट हो रहे हैं। समाज में आदमी आदमी के बीच के संबंध बदल गए हैं। हमारे मूल्य कल्पनाएं कालभाइय सिद्ध हो रहे हैं। संबंधों को समझने समझाने की आवश्यकता महसूस हो रही है। साहित्य में फैंटेसी का आरंभ इसी कारण हुआ है। फैंटेसी का कार्य अलग ढंग का है। वह कल्पनाशक्ति के उपयोग से जीवन की प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष घटनाओं को प्रस्तुत करती। है फैंटसी में व्यंग्य का होना अनिवार्य नहीं होता लेकिन फैंटसी करते वक्त भावों को परखना जरूरी होता है। यह रचनात्मक प्रतिभा लेखक के पास होनी चाहिए।

भोलाराम का जीव इस कहानी का कथानक कुछ इस प्रकार है । भोलाराम एक मध्यम वर्गीय साधारण परिवार से है। उसकी मां ,बीवी ,बच्चे हैं। नौकरी पूरी हो जाने के बाद 5 साल तक उसे अपने पेंशन की प्रतीक्षा रही। पेंशन प्राप्त करने के लिए उसने सरकारी कार्यालय, अधीनस्थ कार्यालय, अधिकारियों को ढेर सारी अर्जियां लिखी ,बिनती की। उसकी पेंशन शुरू कर दी जाए। 5 साल हुए नौकरी समाप्त होकर अब तक उसे पेंशन नहीं मिली। तंग आकर अपनी रोजाना की समस्याओं को हल करते-करते भोलाराम थक गया। उसकी पत्नी ने अपने घर के जितने जेवरात थे भेज दिए। बर्तन बेच दिए। अब बचने के लिए कुछ शेष नहीं रहा। बीवी, बच्चों और भोलाराम की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई। परिवार भूख से बहाल हुआ। फिर भी उसकी पेंशन की अर्जी मंजूर नहीं हुई। प्रतीक्षा करते-करते थक गया भोलाराम जिसने एक दिन भुखमरी से अपनी जान गवा दी। फिर भी 5 साल पूरे होने के बावजूद परिवार को पेंशन नहीं मिली। भोलाराम के मृत्यु के 5 दिन बाद स्वर्गलोक से धर्मराज ने एक यमदूत भेजा भोलाराम के जीव को ले आने। यमदूत पृथ्वी पर आए भोलाराम की आत्मा को यमदूत स्वर्ग लोक में ले जा रहे थे बीच में ही भोलाराम का जीव गायब हो गया। स्वर्ग में पहुंचने के बाद धर्मराज के सामने यमदूत भोलाराम को प्रस्तुत न कर सका। यमदूत आहत हुआ आखिर भोलाराम का जीव कहां गया। पृथ्वी लोक से तो वह उसे साथ ले

आया था। आखिर भोलाराम कहां गया ढूंढते ढूंढते उसे नारद मिले नारद को वास्तविकता ज्ञात होने पर सच्चाई जानने के लिए नारद भोलाराम के घर गए।

नारद मुनि भोलाराम के द्वार पर गए। उनकी पत्नी से मिले। पत्नी से उन्हें यही वास्तविकता का परिचय मिला। सचमुच भोलाराम भूख से बेहाल होकर तड़पकर मारा था और उसका परिवार आज भी उसी हाल से गुजर रहा है । सारी स्थिति को देखने के बाद नारद मुनि भोलाराम के परिवार पर तरस खाकर और यमदूत की समस्या को हल करने के लिए सरकारी ऑफिस में गए । जहां उनकी पेंशन की फाइल रखी हुई थी । 15, 20 अफसरों को मिलने के बाद। सभी द्वारा नारद मुनि को यह सुझाव दिया गया । जब तक भोलाराम की पेंशन की केस पर वजन नहीं रखा जाता पेंशन कैसे आगे नहीं बढ़ेगा। नारद के पास देने के लिए कुछ नहीं था। उन्होंने अपनी वीना अर्थात सतार भोलाराम के पेंशन फाइल पर रखी। लोग हंस पड़े लेकिन उन्होंने उस वीणा का भी स्वीकार किया। भोलाराम की केस की बातें सुनते ही भोलाराम कहां गया भोलाराम कहां गया। इस आवाज को सुनते ही उसे फाइल से आवाज आई । मैं भोलाराम यहां हूं। नारद मुनि को देखते ही पता चला पेंशन की फाइल में भोलाराम की आत्मा आवाज दे रही थी और सुझाव देना चाह रही थी। जब तक मेरे परिवार को पेंशन नहीं मिलती मैं यमलोक नहीं जा सकता।

भोलाराम का जीव की फैंटसी का स्वरूप -

भोलाराम का जीव यह एक व्यंग्य रचना है। इसकी व्यंग्य पर विस्तार से कथानक में जानकारी मिलती है। यहां उसे फेंटसी के संदर्भ में देखना है अर्थात ऐसा करने से उसमें निहित व्यंग्य में कहीं रुकावट नहीं आती । लेखक की कल्पना शक्ति ने समाज में पर्याप्त भ्रष्टाचार को चित्रित करने के लिए एक नई दुनिया का निर्माण किया है। नारद मुनि भोलाराम का जीव यमराज तक पहुंचाने के लिए धरती पर पहुंचते हैं। स्वर्ग में जिनका स्थान है । तथा त्रिलोक की खैर खबर लेने के लिए और बन सके तो दो व्यक्तियों दो दलों में जानबूझकर टंटा खड़ा करने के लिए नारद घूमते रहते हैं।

अपनी प्राचीन कल्पना के अनुसार नारद सर्वज्ञ है। उससे कोई बात छिपी नहीं है। हरिशंकर परसाई जी ने नारद को पृथ्वी पर के दफ्तरों की सैर कराई है। वह भी भोलाराम के घर की गरीबी, भोलाराम की सज्जनता तथा भोलाराम की पत्नी और बच्चों की बुरी हालत देखकर नारद पसीज उठाते हैं और भोलाराम की पत्नी को पेंशन दिलाने के लिए नारद पेंशन वाले दफ्तर में पहुंचते हैं। परसाई जी ने अपनी कल्पना शक्ति के बल पर नारद को दफ्तर पहुंचाया । यह बात नारद मुनि के संदर्भ में नितांत कल्पित है लेकिन उन्हें भोलाराम की पत्नी की हालत देखकर। दया भाव से द्रवित दर्शाया है । अर्थात कल्पित बात को स्वाभाविक बनाया है। इसमें लेखक की प्रतिभा का परिचय प्राप्त होता है । नारद को दफ्तर में घूमने की अतिरंजित कल्पित बात को नई दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। भारत के दफ्तरों में पहले भ्रष्टाचार बाबू लोगों की स्वार्थ तथा कूरर्ता का परिचय दिलाने के लिए। नारद को दफ्तर में घूमना प्रभावशाली कल्पना है। इस फैंटसी के कारण भ्रष्टाचार पर का व्यंग्य प्रहारक बन गया है।

इस प्रकार भोलाराम के जीव का पेंशन की फाइल में अटक जाना भी एक फैंटसी का अच्छा उदाहरण है। यमदूत को चकमा देकर भोलाराम का जीव आकर फाइल में अटक जाता है। जीव अपने नाम की पुकार समझ बैठता है कि उसकी पेंशन की दरख्वास्त मंजूर हो गई है और यह खबर लेकर पोस्टमैन आ गया है आगे चलकर नारद जब कहते हैं कि मैं तुम्हें स्वर्ग ले जाने के लिए आ गया हूं। तब वह स्वर्ग से बढ़कर पेंशन की प्राप्ति को महत्वपूर्ण मानता है।

यह कल्पना की अतिरंजना है । फैंटसी का अच्छा उदाहरण है। इसे अपने परंपरागत धारणा को विरुद्ध सिद्ध किया है और आज की दुनिया की वास्तविकता को प्रभावशाली ढंग से उजागर किया है। परसाई जी ने अपनी प्रतिभाशक्ति के बल पर कल्पना के संसार की निर्मिती की है। जो अजीब है और वास्तव की संगति को प्रभावशाली ढंग से चित्रित करती है। इस प्रकार इस कहानी में फैंटसी का अच्छा प्रयोग किया गया है यह स्पष्ट होता है।

संदर्भ पुस्तके -

१) डॉ सुदर्शन मजीठिया- समकालीन हिंदी व्यंग्य एक परिदृश्य।- राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

२) कमला प्रसाद - हरिशंकर परसाई रचनावली।

३) विश्वनाथ त्रिपाठी- देश के इस दौर में - राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।